अज्ञा और प्रज्ञा

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

अज्ञा अज्ञान है और प्रज्ञा दिव्य ज्ञान है। अज्ञा का अर्थ है–शरीर से जुड़ी हुई सभी परिस्थितियां। आत्म विज्ञान और सनातन सत्य से जुड़ी हुई सभी परिस्थितियां प्रज्ञा है। दोनों का संतुलन मानव जीवन है। जब हम आंख खोलकर देखते हैं तो बाह्य जगत् दिखाई देता है। शरीर और सांसारिक व्यवहार से संचालित सभी क्रियाकलाप अज्ञा है। पूर्वजन्म के भाव कर्म वर्तमान जन्म के द्रव्य कर्म हो जाते हैं। यह सब शरीर से सम्बन्धित है। आत्मा इससे परे है। अन्तःकरण, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार से जुड़ा है। जीवन के सभी कार्य मन से होते हैं। मन संकल्पात्मक, विकल्पात्मक होता है। मन मनन करता है। वह बुद्धि को सामग्री प्रदान करता है। बुद्धि ग्रहण कर निर्णय करती है। चेतना की शक्ति को चित्त कहते हैं। चित्त आत्मा से जुड़ा हुआ है। हमारे शरीर में कोशिकाओं से आत्मा को शक्ति मिलती है। आत्मा शरीर व्यापी है।

यह शरीर अहंकार के कारण प्राप्त होता है। मन पम्पलेट निकालता है, जैसे चुनाव के समय चार–पांच प्रत्याशी चुनाव लड़ने के लिए खड़े होते हैं उनमें से किसको वोट देना चाहिए यह जल्दी निर्णय नहीं हो पाता। अहंकार सभी को देखकर एक विकल्प पर मोहर लगा देता है और उसीको हम वोट दे देते हैं। अहंकार का हस्ताक्षर होते ही प्रतिष्ठित आत्मा का बन्ध हो जाता है। अहंकार अनन्तानुबन्धी होता है। जीवात्मा से जुड़ा हुआ अहंकार लाईव अहंकार कहलाता है। जीवात्मा के राग–द्वेष बढ़ते रहते हैं। राग–द्वेष को समाप्त करना बहुत कठिन है। किसी ज्ञानी पुरुष के सम्पर्क से जब ज्ञान प्राप्त होता है तो यह राग–द्वेष समाप्त होता है। राग–द्वेष रूपी जहर की थैली को ज्ञानी पुरुष ही दूर कर सकता है।

अज्ञा का सम्बन्ध भौतिक जगत् से है। मन, वचन, काया से प्राप्त हर अवस्था अज्ञा से सम्बन्धित है। अज्ञा और प्रज्ञा परतंत्रता और स्वतंत्रता से जुड़ी हुई है। प्रज्ञा आत्मा है। यह

भावसत्ता से जुड़ी है। ज्ञान के जागृत होने पर अपने स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। दिव्य दृष्टि की प्राप्ति हो जाती है। महाभारत के युद्ध में अर्जुन को अज्ञान होने पर भगवान कृष्ण ने उन्हें दिव्य दृष्टि देकर सत्य का ज्ञान कराया जिससे उनकी प्रज्ञा जागृत हो गयी। प्रज्ञा जागृत होकर शरीर को निर्देश देती है। प्रज्ञा के कारण मनुष्य की बुराई समाप्त हो जाती है, प्रज्ञा मोक्ष की प्रतिनिधित्व करती है। सामायिक, आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान करने से समभाव आ जाता है जिससे आत्मा विभाव को छोड़कर स्वभाव में स्थित हो जाती है। अवचेतन मन का संसार प्रज्ञा का संसार है।

प्रज्ञा तीसरा नेत्र है। ज्ञान के जागृत होने से अज्ञान भष्मीभूत हो जाता हैं। राग–द्वेष रूपी विष के नष्ट हो जाने पर अहंकार नष्ट हो जाता है। जन्मजन्मान्तर से अर्जित कर्मों की निर्जरा हो जाती है। सामायिक आलोचना प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान के द्वारा जीव योनियों के दोष दूर होते हैं। अतः अज्ञा को छोड़कर प्रज्ञा की शरण में जीव को जाना चाहिए। जीव जब ईश्वर की शरण में जाता हैं तो ईश्वर की कृपा से उसके सब दोष दूर हो जाते हैं। ईश्वर की शरण में जाने से जीव के जन्मजन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं।

प्रकाश ज्ञान का परिचायक है और अज्ञान अंधकार का द्योतक है। दीपक घोर अंधकार को दूर कर प्रकाश कर देता है। सरस्वती ज्ञान की देवी है। ज्ञान के लिए सरस्वती की आराधना की जाती है। सरस्वती की प्रसन्नता से लोगों को ज्ञान प्राप्त होता है। दीपक को प्रज्वलित करके सरस्वती की पूजा की जाती है और प्रार्थना की जाती है कि जीवन को ज्योतिर्मय कर दो। ज्ञान दूसरे को प्रकाशित करता है। मानव को स्वपर प्रकाशक होना चाहिए। तीन तरह की चेतना है– स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ की चेतना। जियो और जीने दो की भावना परार्थ की चेतना से सम्बन्धित है। स्वार्थ की चेतना अपने और अपने परिवार तक सीमित रहती है। परमार्थ की चेतना ज्योतिर्मय ज्ञान है।

मानव के सामने दो जगत हैं– लौकिक जगत और आध्यात्मिक जगत। लौकिक जगत् पांच इन्द्रियों का जगत है। इस जगत में सभी प्राणी रहते हैं और अपनी चेतना का विकास करते हैं। आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र है। आध्यात्मिकता के ही कारण भारत को

विश्वगुरु का दर्जा प्राप्त है। प्राच्य और पाश्चात्य संस्कृतियों के मेल से जो संक्रमण आया भौतिक समृद्धि उसी का परिणाम है। हमारे देश में सर्वप्रथम आत्मचिंतन हुआ। हम कौन हैं? कहां से आये हैं? मरने के बाद यहां से आत्मा कहां जाती है? आत्मा का अस्तित्व है या नहीं इन सब विषयों पर भारतीय वाङ्मय में गम्भीर चिंतन हुआ है। इस चिंतन से प्रज्ञा का जगत् उद्घाटित होता है। भारतीय चिंतकों ने भौतिक समृद्धि को अधिक महत्व नहीं दिया। उनके विचार में धन नश्वर है। आज है कल नहीं रहेगा। इसलिए ऐसी सम्पदा को प्राप्त किया जाये, जिसका अस्तित्व त्रिकाल में वर्तमान रहता है। इसलिए भारतीय शास्त्र वेत्ताओं ने अपने चिंतन के केन्द्र में आत्मा को रखा। प्रज्ञा का जगत् इन्द्रियातीत की अवस्था है। इससे सनातन सत्य दिखलाई देता है।